प्रो० सुधीर कुमार सिंह, प्राचार्य, रोहतास महिला कालेज, सासाराम, समाजशास्त्र विभाग, ग्रामीण समाजशास्त्र
प्रश्न पत्र - VI, बी०ए०(H), खण्ड - III

VIDYA
PAGE NO.: 01
DATE: / /

संस्कृतिकरण की विशेषताएँ - (7) के बाद क्रमशः -

(8) संस्कृतिकरण की प्रक्रिया के द्वारा सामाजिक पद में परिवर्तन के लिए एक निम्न जाति दो या तीन पीढ़ी पहले से अपना संबंध किसी उच्च जाति से जोड़ती है।

(9) Dr. Yogendra Singh (डॉ० योगेन्द्र सिंह) संस्कृतिकरण की प्रक्रिया को अग्रिम समाजीकरण (Anticipatory Socialization) कहते हैं, अर्थात इसमें एक निम्न जाति किसी उच्च जाति की संस्कृति को इस आशा से अपनाती है कि इसे जाति में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

(10) संस्कृतिकरण की प्रक्रिया सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की सूचक है। मिल्टन सिंगर का कहना है कि " M.N. Shrinivas का संस्कृतिकरण का सिद्धांत भारतीय सभ्यता में सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का अत्यंत विस्तृत रूप से स्वीकृत मानव-शास्त्रीय सिद्धांत है। यह समाज व संस्कृति में होनेवाले परिवर्तनों का उल्लेख करता है।

Page N 02

(11) संस्कृतिकरण की प्रक्रिया निम्न जातियों की इस महत्त्वाकांक्षा और प्रयत्न की सूचक है कि वे उच्च जातियों की जीवन-शैली को अपनी जातीय स्थिति को ऊँचा उठायें।

(12) श्रीनिवास कहते हैं कि संस्कृतिकरण की प्रक्रिया एक द्विमार्गी प्रक्रिया (Two-way Process) है अर्थात इसमें सदैव ही निम्न जातियाँ ऊँची जातियों की संस्कृति को ग्रहण नहीं करतीं वरन् उच्च जातियाँ भी निम्न जातियों की संस्कृति के कुछ तत्त्वों को ग्रहण करती हैं।

(13) Dr. Yogendra Singh इसे विचारधारा को ग्रहण करने वाली प्रक्रिया (Ideology Borrowing Process) कहते हैं जिसमें निम्न जाति उच्च जाति की पाप-पुण्य, धर्म-कर्म, माया-संसार आदि की विचारधारा को अपनाती है।

(15) संस्कार, राजनैतिक और आर्थिक शक्ति का महत्त्व - संस्कृतिकरण में उपर्युक्त तीनों शक्तियों का महत्त्व है। एक क्षेत्र में सत्ता प्राप्त कर लेने पर दूसरे क्षेत्र के लिए प्रयास

किये जाते है। आर्थिक शक्ति प्राप्त कर लेने पर एक जाति संस्कृतिकरण करने के लिए प्रयत्न कर सकती है। इसी प्रकार से राजनैतिक सत्ता प्राप्त कर लेने पर एक जाति आर्थिक उन्नति कर संस्कृतिकरण कर सकती है।

———— x ————